।। तमसो मा ज्योतिर्गमय ।।

पुनरुत्थान कार्य अने विचार सन्देश

पुनरुत्थान ट्रस्ट के विचार एवं कार्य के प्रसार हेतु मासिक पत्रिका मूल्य रु. ३/–

प्रकाशन स्थल : पुनरुत्थान ट्रस्ट 'ज्ञानम्' ९ बी, आनन्दपार्क, बलियाकाका मार्ग, जूना ढोर बजार, कांकरिया, अहमदाबाद – ३८० ०२८

वर्ष : १३ • अंक : ४ • कार्तिक, शक संवत् १९४३ • युगाब्द ५१२३ • नवम्बर २०२१

सप्रेम नमस्कार ।

देश के घर–घर में पलने वाली राष्ट्र की नई पीढ़ी कितनी असुरक्षित है इस की कल्पना भी भयावह है, वह भयावह लगती नहीं है इस का कारण उनके माता–पिता का अनाड़ीपन है । माता–पिता के अनाडीपन का कारण विश्व–विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाला समाजशास्त्र का पाठ्यक्रम है और ऐसे अनर्थक पाठ्यक्रम का कारण हमने शिक्षा को राष्ट्रीय नहीं बनाया यह है ।

माता–पिता के अनाडीपन के कुछ नमूने ।

- घर में एक ही संतान होना ।
- बच्चे की माँग को पूरी करना ।
- बच्चे को किसी भी प्रकार का काम नहीं करने देना ।
- बच्चे को संयम, अनुशासन, विनय और सेवा नहीं सिखाना ।

अनाड़ी माता–पिता इसे लाड़–प्यार करते हैं । ऐसे बच्चे बड़ों का कहना नहीं मानते तब दुःखी होते हैं । ऐसे बच्चे दुर्गुण और दुराचार से ग्रस्त हो जाते हैं तब चिंता में पड़ जाते हैं । ऐसे बच्चे स्वयं के लिये, कुटुंब के लिये, समाज के लिये, राष्ट्र के लिये बोज बनते हैं । इसका दोष माता–पिता का है ।

माता–पिता अनाडी क्यों हैं ?

- किसी भी बालक या बालिका को पिता और माता बनना विद्यालय में या घर में सिखाया नहीं जाता है ।
- परिणाम स्वरूप माता–पिता को बच्चे को जन्म देने के शास्त्र की जानकारी नहीं होती है ।
- बालकों का संगोपन करना अपना काम है । अपना दायित्व हैं ।
- पैसा कमाने को और पैसा कमानेवाली शिक्षा को इतना अधिक महत्त्व दिया जाता है कि घर चलाना और बालकों का संगोपन करना माता–पिता को सिखाया ही नहीं जाता ।
- समाज और संस्कृति विषयक शास्त्रों को ही निम्न स्तर के माने जाते हैं, इसलिये उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता है ।
- पैसा कमाने के लिये इतना अधिक परिश्रम करना पडता है कि बालकों की ओर ध्यान देने का समय ही नहीं है ।

इन कारणों से माता–पिता बालक को जन्म तो देते हैं परंतु उनके सांस्कृतिक माता–पिता नहीं बन सकते । दो पीढियों का भावानिक संबंध विकसित नहीं होता वह भौतिक और आर्थिक संबंध बनकर रह जाता है । स्त्री और पुरुष को माता–पिता बनना सिखाया नहीं जाता, क्योंकि –

- यह सिखाने वाली पूर्व पीढी साथ नहीं होती ।
- समाजशास्त्र के पाठ्यक्रम व्यक्ति–केन्द्री समाजव्यवस्था का स्वीकार कर बनाये जाते हैं ।
- बच्चों को माता–पिता से सुरक्षा हेतु आयोग और कानून बनाने तक हम गये हैं ।
- सामाजिक करार के सिद्धांत के आधार पर कुटुंब के संबंधों की व्याख्या की जाती है और उन व्याख्याओं को लागू करनेवाली व्यवस्था तथा –
- इन सबका कारण यह है कि हम जीवन का युरो–अमेरिकी सेमेटिक दृष्टि के आधार पर ही व्यवस्थायें भी बनाते हैं और पाठ्यक्रम भी । व्यवस्था और पाठ्यक्रम एक–दूसरे के

सहायक बन जाते हैं और स्वाभाविक परिणाम नई पीढ़ी के निर्माण का संकट है ।

इस पुस्तक को कहीं पर तो भेदने की आवश्यकता है । भेदने के दो बिन्दु हैं । एक है उच्चशिक्षा में प्रतिष्ठित शोध और प्रगत अध्ययन और दूसरा है प्राथमिक शिक्षा । दोनों एक साथ होना आवश्यक है ।

ऐसा संभव बनाने के लिये व्यक्तियों, संस्थानों और संगठनों को योजना बनाकर चलना चाहिये । प्रश्न बडा विकट है, संकट बहुत गहरा है इसलिये प्रयास भी बहुत समर्थ और तत्काल होने की आवश्यकता है । इति शुभम् ।

सम्पादक

वेद और उपवेद

भारत की ज्ञानसंपदा में वेद और उपवेद का महत्त्व अनन्य साधारण है । जगत के जितने भी विषय हैं या हो सकते हैं उन सभी के तत्त्व और व्यवहार के सारे सिद्धांत इनमें उपलब्ध हैं । हमें लगता है कि भौतिक विज्ञान और यंत्रशास्त्र तो इनमें नहीं हो सकता । परंतु आज के तथाकथित विकसित प्रगत भौतिक विज्ञानों और यंत्र–विज्ञानों से कहीं अधिक विकसित, विस्तृत और प्रगन शास्त्र हमें वेदों और उपवेदों में मिलते हैं । ये अभी गुप्त और विस्मृत भी नहीं हैं । ये सब उपेक्षित हैं । ये दुर्लक्षित हैं । हमारी भ्रान्त धारणाओं और हीनताबोध के कारण उनका अध्ययन नहीं होता है । अध्ययन नहीं होने के कारण उनमें अनुसंधान नहीं होता है और उन्हें प्रासंगिक नहीं बनाया जाता है । बुद्धिविभ्रम के कारण ही उन्हें संस्कृत विभाग में डाला जाता है । आवश्यकता है इनका वैज्ञानिक और जीवंत अध्ययन होने को, वैज्ञानिकता भौतिकता से मुक्त कर बौद्धिक बनाने को और भौतिक और भावात्मक पक्षों को एक साथ रखने की । ऐसा कहने से हम वर्तमान में पढाये जाने वाले शास्त्रों का भारतीय स्वरूप विकसित और प्रस्थापित कर पायेंगे ।

ज्ञानसागर विषय ग्रंथसूचि

	ग्रंथ के विषय	ग्रंथ संख्या	पृष्ठ संख्या	मूल्य रु.
१.	अध्यात्म	१२	२११८	२५८५
२.	धर्म, संस्कृति और समाज की भारतीय संकल्पना प्रस्तुत करने वाले ग्रंथ	६३	१३३५३	१७१७०
३.	कुटुंब शिक्षा	४३	८२७४	१०४३५
४.	अधिजनन	१४	२४५८	३१९०
५.	शिक्षा	७१	१३५४९	१७४९०
६.	हिंदुत्व, राष्ट्रीयत्व, भारतीयत्व	४०	८३१०	११०३५
७.	राज्य और शासनव्यवस्था विषयक भारतीय दृष्टि प्रस्तुत करनेवाले ग्रंथ	२०	३६०६	५१०५
८.	अर्थशास्त्र	२४	५०१४	६२५५
९.	आयुर्वेद	४१	७९५२	९१००
१०.	गोविज्ञान	१६	३१७४	३६००
११.	पर्यावरण	४	८६६	१०८०
१२.	कृषि ग्रामविकास	११	२२४६	२८९०
१३.	विज्ञान, तंत्रज्ञान, भूगोल, ज्योतिषविज्ञान आदि	३५	६९८६	१०२६०
१४.	भौतिक विज्ञान	१७	३४५४	४५१०
१५.	भाषा साहित्य	११	२२५८	२८९५
१६.	योग संगीत कला	३०	५९८५	७४२५
१७.	तत्त्वज्ञान दर्शन	३७	७२५२	९२८५
१८.	गीता	७	१५१३	२०४५
१९.	वेदपुराण	२२	४६६१	६०२५
२०.	इतिहास	५५	१२१०८	१४२१०
२१.	ज्ञान स्त्रोत ग्रंथों के संक्षेप	६८	१२८८४	१४२९०
२२.	संघ एवं विविध क्षेत्र	१९	३०४८	४११०
२३.	सांस्कृतिक परिचय	१२	२०९६	२२६०
२४.	मनोविज्ञान	११	२३६८	२८१०
२५.	पूर्वोत्तर भारत	१८	२९९२	४०२५
२६.	धर्मपाल एक समग्र लेखन	१२	२९८१	४०२०
२७.	व्यायाम ज्ञान कोश	२०	५०००	६८००
२८.	चरित्र	१२	२०५२	२१४०
२९.	आलेख ग्रंथ	१००	२०००	२५०००
३०.	भारतीय ज्ञान पाठावली	२००	३८०४८	५०५००

भारतीय ज्ञान पाठावली

५ से २० वर्ष के छात्रों हेतु संस्कारक्षम, भारतीयता से ओतप्रोत ज्ञानमूलक भरपूर वाचनसामग्री ।

२१ वी शताब्दी भारत की शताब्दी है । भारत को विश्व का नेतृत्व करना है । जिन संकटों में वर्तमान विश्व फँस गया है उन संकटों से उसे उबारकर सुख, समृद्धि, संस्कार, शांति और आनंद की ओर ले जाना है ।

भारत के पास इसकी ईश्वर प्रदत्त क्षमता है, ईश्वर प्रदत्त दायित्व है ।

हमारी भावी पीढी को इस हेतु सिद्ध होना है, सक्षम होना है । सिद्ध होने के लिये उस पीढी को –

- अपने आपको जानना है, आत्म–विश्वास से भरपूर होना है ।
- विश्व को जानना है, विश्व के संकटों का आकलन करना है ।
- भारत को जानना है, भारत की जीवनदृष्टि जीवनमूल्य, संस्कृति, भारत की जीवन–व्यवस्था को जानना है ।
- भारतीय होने के गौरव का अनुभव करना है, अपने सामर्थ्य को पहचानना है ।

इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति के लिये भारतीय ज्ञान पाठावली के इन ग्रंथों का निर्माण हुआ है ।

क्या है इस ज्ञान पाठावली में

- भारतीय ज्ञानसंपदा, जीवनदृष्टि, परंपरा विषयक लेख
- ज्ञानविज्ञान के क्षेत्र में भारत को उपलब्धि विषयक जानकारी ।
- हमारे पूर्वजों का परिचय
- हमारा सांस्कृतिक इतिहास
- वर्तमान विश्व के परिदृश्य में भारत को भूमि का वेदयंत्र, सुभाषित, गीता यह सब होगा ।
- कहानी, गीत, संवाद, निबंध, आदि के रूप में छोटी आयु के छात्रों के लिये चित्र भी होंगे ।
- विद्वान और भारत के परम हितैषी लेखकों के लेख ।

रचनाकीय विवरण

श्रेणी	छात्रों की आयु	ग्रंथ संख्या	एक ग्रंथ में पुस्तको की संख्या	कुल पुस्तिका की संख्या
अंकुर	५ से ६ वर्ष	११	१०	११०
पल्लव	७ से ८ वर्ष	१३	८	१०४
तीर्थ	९ से १० वर्ष	१५	६	९०
प्रसाद	११ से १२ वर्ष	१७	५	८५
धृति	१३, १४, १५ वर्ष	१९	४	७६
धारणा	१६ ले १७ वर्ष	२१	३	६३
मेधा	१८, १९, २० वर्ष	२३	२	४६
प्रज्ञा	प्रबुद्धजनो के लिए	२५	१	२५
चित्ति	शिक्षा में शोधकार्य करने वाले विद्वानो के लिए	२७	१	२७
परिधि	सर्व सामान्य जिज्ञासुओं के लिए	२९	१	२९

सभी आयुवर्ग के छात्रों के लिये इसमें भरपूर वाचनसामग्री हैं ।

हमारी अपेक्षा है कि अभिभावक और विद्यालय के संचालक और आचार्य अपने बच्चों और छात्रों को इस सामग्री का पठन करने हेतु प्रेरित करें ।

मूल्य और वर्तन

हरेक ग्रंथ का मूल्य रु. २५०/– हैं । अग्रिम ग्राहक योजना के वर्तन को रचना के अनुसार ही इस में वर्तन होगा । यह है –

- दस हजार की खरीदी पर २५ % वर्तन ।
- दस हजार एक से चालीस हजार की खरीदी पर २५% प्रतिशत वर्तन ।
- चालीस हजार से १ लाख की खरीदी पर ३५ % प्रतिशत होगा ।
- १ लाख एक से अधिक की खरीदी पर ४० % प्रतिशत वर्तन ।

अग्रिम ग्राहक बनें और बनायें, घर–घर भारतीय ज्ञान पहुँचायें ।

अग्रिम ग्राहक भुगतान के लिये बैंक का विवरण

A/C name : Punarutthan Prakashan Seva Trust
Bank name : BANK OF BARODA
Branch name: Bapunagar, Ahmedabad
A/C no. : 84620200000304
IFSC Code : BARB0DBBAPU

भारतीय ज्ञान पाठावली सूचि

अंकुर श्रेणी

१.१ बादल बरसे रिमझिम
१.२ रंगों का दरबार
१.३ भारत की माटी
१.४ जहाँ मेल वहाँ खेल
१.५ स्वयं करके देखें
१.६ सुदामा के चावल
१.७ भारत कथा – बाल चाणक्य वाचन पोथी भाग–१
१.८ रामकथा – बाल चाणक्य वाचन पोथी भाग–२
१.९ कृष्णकथा – बाल चाणक्य वाचन पोथी भाग–३
१.१० गीता कथा – बाल चाणक्य वाचन पोथी भाग–४
१.११ सुनो कहानी – संस्कार बाल कहानियाँ

पल्लव श्रेणी

२.१ सेवा
२.२ सूर्यदेव
२.३ जादूभरे शब्द
२.४ विनय
२.५ बिल्लीमौसी
२.६ सुंदरता
२.७ प्रेरक कहानियाँ
२.८ दिखता भिन्न–होता एक
२.९ मैं पढ़ता हूँ भाग–१
२.१० मैं पढ़ता हूँ भाग–२
२.११ मैं पढ़ता हूँ भाग–३
२.१२ देवपुत्र की चित्रकथाओं का संग्रह
२.१३ विज्ञान अनुभव

तीर्थ श्रेणी

३.१ सज्जन का घर
३.२ राजा भगीरथ
३.३ प्रतिभा
३.४ उद्योगपुर
३.५ तपस्वी कौशीक
३.६ तेजस्वी धीरा
३.७ क्षमाशील वसुधा
३.८ चक्र की कमाल
३.९ आंगन सुहाना
३.१० हमारे दरजी काका
३.११ संस्कार सुमन (कुछ प्रेरक प्रसंग एवं सुबोध)
३.१२ संकल्प और दायित्व (बालकथाओं एवं कविताओं का संग्रह)
३.१३ रसात्मक–काव्य (देवपुत्र की कविताओं का संकलन)
३.१४ बकोर पटेल (बाल कहानियों का भाग–१)
३.१५ बकोर पटेल (बाल कहानियों का बाग–२)

प्रसाद श्रेणी

४.१ गंगावतरण
४.२ बेचारा अमेरिका
४.३ अनोखी पाठशाला
४.४ मन के जीते जीत
४.५ सुहानी शरद
४.६ ऋतुओं का मजा
४.७ घरनंदनवन
४.८ अद्भुत गाय
४.९ प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक
४.१० शूर हिमवान – (हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान का सांस्कृतिक परिचय))
४.११ भगीरथ भूमि – (उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, उडीसा का सांस्कृतिक परिचय)
४.१२ वन्य अरुणिमा भाग १ – (सिक्कीम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर का सांस्कृतिक परिचय)
४.१३ वन्य अरुणिमा भाग २ – (असम, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम का सांस्कृतिक परिचय)

४.१४ दक्षिणापथ – (केरल, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाणा, कर्णाटक का सांस्कृतिक परिचय)
४.१५ भारत मेखला – (गोवा, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ का सांस्कृतिक परिचय)
४.१६ कण कण भारत – (जम्मुकश्मीर, लद्दाख, चंडीगढ, दिल्ली, अंदमान–निकोबार, लक्षद्वीप, दादरानगर हवेली, पोंडिचेरी का सांस्कृतिक परिचय)
४.१७ बाल पुराण

धृति श्रेणी

५.१ पवित्र हाथ
५.२ जतन करो
५.३ सत्य
५.४ राष्ट्र, धर्म और समाज
५.५ एकता की विजय
५.६ आगे बढ़ो
५.७ गीता संवाद
५.८ पंचमहाभूत
५.९ जहा देखो वहा ॐ
५.१० प्रकृति को प्रसन्न रखे
५.११ हम है भारतीय गायें
५.१२ चार भारतीय वैज्ञानिक (जीवन कार्य की नाट्य प्रस्तुति)
५.१३ वीरव्रतधारी – देशभक्ति कथाओं का संकलन
५.१४ मृगनयनी (तीस किशोर कथाएँ)
५.१५ विक्रम और वेताल भाग–१ (चंदामामा की कहानियों का संकलन)
५.१६ विक्रम और वेताल भाग–२ (चंदामामा की कहानियों का संकलन)
५.१७ विक्रम और वेताल भाग–३ (चंदामामा की कहानियों का संकलन)
५.१८ किशोर भारत
५.१९ भारतीय पक्षी परिचय

धारणा श्रेणी

६.१ चमत्कार
६.२ सही शब्द सही अर्थ
६.३ शरणागत
६.४ सुकर्मा
६.५ स्वर्णनिर्झर
६.६ देशविदेश
६.७ ज्ञान की शक्ति, विजय की स्थिति
६.८ बुद्धि देती ज्ञान
६.९ सर्वव्यापी आत्मा
६.१० संकल्प
६.११ दीप यूँ ही जलते रहें (प्रेरणादायी नाटकों का संग्रह)
६.१२ व्याधपुर (संस्कृति यात्रा की कहानियाँ)
६.१३ राष्ट्रचेतना का शंखनाद छात्रों के लिए नाटक संग्रह
६.१४ हितोपदेश
६.१५ भारत के प्रमुख विज्ञानाचार्य
६.१६ हमारे राष्ट्र निर्माता
६.१७ बोध कथाएँ
६.१८ राष्ट्र भावना के गीत
६.१९ पूजा हो तो ऐसी
६.२० अपना केशव अपना माधव
६.२१ सुभाषित निरूपण

मेधा श्रेणी

७.१ चेतना के स्वर
७.२ कर्मसंस्कृति
७.३ संस्कृति के आधार
७.४ विराट की जागृति
७.५ प्राणमय आत्मा
७.६ शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्
७.७ मेधा
७.८ धी
७.९ मती
७.१० बुद्धि
७.११ शिवाजी का जीवन चरित्र
७.१२ मातृवत परदारेशु
७.१३ पंचऋषि कथा
७.१४ भारत को जानें
७.१५ युवा और सेवा
७.१६ व्यसन मुक्ति
७.१७ समर्थ भारत
७.१८ अर्थकरी शिक्षा
७.१९ सेमेटिकासूर
७.२० जीवन नियोजन
७.२१ श्रुति और स्मृति
७.२२ विज्ञान
७.२३ धर्म

प्रज्ञा श्रेणी

८.१ मनीषी वाणी भाग १(श्री गुरुजी के लेखो और भाषणों का संकलन)
८.२ मनीषी वाणी भाग २(श्री गुरुजी के लेखो और भाषणों का संकलन)
८.३ सुधी वाणी (रंगाहरीजी के लेखो और भाषणों का संकलन)
८.४ सुरेशजी सोनी उवाच

८.५ कृष्ण गोपालजी विचार संग्रह
८.६ संघ शिक्षा वर्ग बौद्धिक : पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के भाषणों का संग्रह : भाग १
८.७ संघ शिक्षा वर्ग बौद्धिक : पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के भाषणों का संग्रह : भाग २
८.८ एकात्म मानववाद एक समग्र चिंतन
८.९ मोहनजी कहते हैं.... मोहनजी भागवत के भाषणों का संकलन
८.१० वह काल – पंडित दीनदयाल उपाध्याय के काल का भारत
८.११ व्यावहारिक अर्थचिंतन – पंडित दीनदयाल उपाध्याय के भाषणों और लेखों का संकलन
८.१२ संस्कृति चिंतन – पंडित दीनदयाल उपाध्याय के भाषणों और लेखों का संकलन
८.१३ समाज चिंतन – दत्तोपंत ठेंगडी के भाषणों और लेखों का संकलन
८.१४ चिंतन प्रवाह – दत्तोपंत ठेंगडी के भाषणों और लेखों का संकलन
८.१५ कार्यकर्ता गुणविकास – दत्तोपंत ठेंगडी के भाषणों और लेखों का संकलन
८.१६ संस्कृति व्याख्यान पंचक
८.१७ रवीन्द्र गुरुजी के भाषणों का संग्रह
८.१८ संस्कृति शोध – प्रशांत पोळ के लेखों का संग्रह
८.१९ वैदिक व्याख्यान माला
८.२० समाज संगठन – दत्तोपंत ठेंगडी के लेखों और भाषणों का संकलन
८.२१ परम वैभव का मार्ग
८.२२ समरसता दर्शन
८.२३ प्रकृति और संस्कृति
८.२४ युगानुकूल रचनाएँ
८.२५ व्यवस्थाओं को सरल बनाने के उपाय

चिति श्रेणी

९.१ चिति चिंतनम्
९.२ समग्र विकास
९.३ स्वायत्त शिक्षा
९.४ पाठ्यक्रम और विषयवस्तु
९.५ ज्ञान संकल्पना
९.६ परिवार शिक्षा
९.७ राष्ट्रीय शिक्षा
९.८ धर्मानुसारिणी शिक्षा
९.९ शिक्षा – भारतीय दृष्टि
९.१० एकात्म मानवदर्शन और शिक्षा
९.११ भाषा–चिंतन
९.१२ समाज, राज्य, अर्थ, विधि, शिक्षा
९.१३ यतो धर्मस्ततो जयः
९.१४ शिक्षा विषयक मननीय लेख
९.१५ इतिहास : भारतीय दृष्टि
९.१६ दार्शनिक लेख
९.१७ इतिहास पुनरवलोकन – इतिहास दर्पण के लेखों का संकलन
९.१८ भारतीय विज्ञान के कर्णधार भाग–१
९.१९ भारतीय विज्ञान के कर्णधार भाग–२
९.२० भारतीय विज्ञान के कर्णधार भाग–३
९.२१ हिन्दू भौतिक विज्ञान भाग – १
९.२२ हिन्दू भौतिक विज्ञान भाग – २
९.२३ हिन्दू मनोविज्ञान
९.२४ २१वीं शताब्दि का विश्वविद्यालय
९.२५ शिक्षा क्षेत्र में लोकमत परिष्कार
९.२६ शिक्षक निर्माण का कठीन मार्ग
९.२७ आए गुरुकूल शुरु करें

परिधि श्रेणी

१०.१ बातें परिवार की (अर्पणा रामतीर्थकर के भाषणों का संकलन)
१०.२ पावनी
१०.३ कांति लोधी की चिंतन कविताओं का संग्रह
१०.४ भारत की वर्तमान राजनीतिक पार्टियाँ
१०.५ जागो देखो करो : 'पुनरुत्थान विचार एवं कार्य संदेश' के चयनित संपादकीय लेखों का संग्रह
१०.६ बृहत्तर आसाम की कथाएँ
१०.७ आदर्श महिलाएँ
१०.८ बीज बनेगा वृक्ष 'बप्पा रावल' पत्रिका से चयनित लेखों का संग्रह
१०.९ विचार प्रवाह 'पुनरुत्थान विचार एवं कार्य संदेश' के चयनित लेखों का संकलन
१०.१० सदाचार मकरंद
१०.११ वेद – उपनिषद की कथाएँ भाग–१
१०.१२ वेद – उपनिषद की कथाएँ भाग–२
१०.१३ अवकाश का सदुपयोग
१०.१४ परिवार गोष्ठी
१०.१५ स्वहित सरणी
१०.१६ अनुपम कहानियाँ भाग–१
१०.१७ अनुपम कहानियाँ भाग–२
१०.१८ भारत की श्रेष्ठ लोककथाएँ
१०.१९ अधिकार एवं कर्तव्य
१०.२० स्मृति श्लोक संग्रह
१०.२१ व्यक्ति चित्र
१०.२२ झीनी रेखा
१०.२३ चिंतन चिरंतन
१०.२४ गो संबंधि व्रत एवं त्यौहार
१०.२५ पर्यावरण विचार
१०.२६ अच्छी बातें
१०.२७ युवा पौढ़ और वृद्ध
१०.२८ वेदोंऽखिलो ज्ञान मूलम्
१०.२९ शिक्षित या अशिक्षित

भारतीय शिक्षा ग्रंथमाला अध्ययन योजना

अध्ययन में जुड़ने हेतु जिज्ञासुओं को आवाहन :

पुनरुत्थान विद्यापीठ भारतीय शिक्षा की पुनः प्रतिष्ठा करना चाहता है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये द्विआयामी प्रयास चल रहे हैं । एक आयाम है अध्ययन और दूसरा आयाम है संगठन । दोनों आयामों को साथ रखते हुए जो कार्य रहा है उसमें अध्ययन, अनुसंधान, पाठ्यक्रमों का निर्माण एवं संचालन, संदर्भ साहित्य का निर्माण एवं प्रकाशन, विद्वत् गोष्ठियां, अभ्यास वर्गों आदि का समावेश होता है । इन सभी गतिविधियों में एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है ग्रंथमाला अध्ययन योजना ।

विद्यापीठने भारतीय शिक्षा ग्रंथमाला शीर्षक से पाँच ग्रंथों का निर्माण एवं प्रकाशन किया है । ये पाँच ग्रंथ इस प्रकार हैं...

१. भारतीय शिक्षा : संकल्पना एवं स्वरूप
२. शिक्षा का समग्र विकास प्रतिमान
३. भारतीय शिक्षा के व्यावहारिक आयाम
४. पश्चिमीकरण से भारतीय शिक्षा की मुक्ति
५. वैश्विक संकटों का निवारण भारतीय शिक्षा

प्रत्येक ग्रंथ ए-४ आकार का चार सौ पृष्ठों का है । भारतीय शिक्षा और उसकी प्रतिष्ठा विषयक लगभग सभी विषयों की सांगोपांग चर्चा इन ग्रंथों में की गई है । इन ग्रंथों का केवल प्रकाशन पर्याप्त नहीं है । इनका अध्ययन होकर प्रयोग और प्रसार भी व्यवस्थित रूप में होना चाहिये । इस दृष्टि से इन ग्रंथों के व्यवस्थित अध्ययन की योजना बनी है । वही है ।

भारतीय शिक्षा ग्रंथमाला अध्ययन योजना इस अध्ययन योजना में जुडने हेतु सभी जिज्ञासुओं को आवाहन है, निमंत्रण है, इसमें जुडकर एक जिज्ञासु अध्येता बन सकता है ।

योजना का स्वरूप

यह पाँच वर्ष की योजना है । हर वर्ष वसंतपंचमी को अध्ययन वर्ष का प्रारंभ होता है । अध्ययन पंचपदी पद्धति से होता हैं । पंचपदी के पाँच पद हैं अधीति, बोध, अभ्यास, प्रयोग और प्रसाद । यह भारतीय मनोविज्ञान के सिद्धांतो के आधार पर विकसित भारतीय अध्ययन पद्धति है । हम सब जानते हैं कि विषयवस्तु के साथ-साथ अध्ययन की पद्धति का भी महत्त्व होता है । इस अध्ययन योजना में विषयवस्तु और अध्ययन पद्धति दोनों पूर्णरूप से भारतीय हैं ।

सामान्यतः पाँच पद और पाँच वर्ष के हिसाब से एक-एक वर्ष एक-एक पद के लिये दिया गया है ऐसा लगता है परंतु समय सीमा अध्येता के अध्ययन गति पर निर्भर करती है । कोई अध्येता दो-तीन-चार वर्षों में भी अध्ययन पूर्ण कर सकता है तो किसी को दस वर्ष भी लग सकते हैं ।

अध्ययन योजना में जुडने का विशेष महत्त्व

योजना में जुड़े बिना भीं ग्रंथों का पठन हो ही सकता है और तेजस्वी पाठक ग्रंथों का आशय समझ सकते हैं और विद्वान पाठक ग्रंथों का मूल्यांकन भी कर सकते हैं । परंतु योजना में जुड़कर अध्ययन करने का विशेष महत्त्व है । महत्त्व यह है कि -

- योजना में जुड़कर अध्येता विद्यापीठ का छात्र बनता है और उसे छात्र के अधिकार और कर्तव्य प्राप्त होते हैं ।
- अध्येता विद्यापीठ के दर्शन और कार्यविजन और मिशन के साथ अंतःकरण से जुड़ता है ।

अध्येता के लियें विद्यापीठ का आचार्य बनने का मार्ग प्रशस्त होता है ।

अध्ययन योजना में जुड़े अध्येताओं से इस प्रकार की अपेक्षा है...

१. हर वर्ष वसंतपंचमी को प्राज्ञसंस्कार होता है । प्राज्ञ संस्कार से अध्येता का प्रवेश सुनिश्चित होता है । व्यासपूर्णिमा विद्यापीठ का स्थापना दिन है । इन दोनों अवसरों पर अध्येता को उपस्थित रहकर सहभागी होना है ।
२. हर पंद्रह दिन में एक घंटे का ऑनलाइन अभ्यास वर्ग होगा । उसमें अनिवार्य रूप से सहभागी होना है ।
३. वर्ष में दो बार पाँच पाँच दिन के केन्द्र पर प्रत्यक्ष रूप में अभ्यासवर्ग होंगे । उनमें सहभागी होना है ।
४. वर्ष में एक बार अध्ययन यात्रा होगी । उसमें सहभागी होना है ।
५. वर्ष भर की अध्ययन की एक समय-सारिणी और अध्ययनपद्धति के कुछ नियम और निर्देश होंगे । उनका अनुसरण करना है । स्वाभाविक है कि यह अध्ययन आजकल की तरह किसी परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रमाणपत्र प्राप्त करने हेतु किया जाने वाला यांत्रिक और औपचारिक अध्ययन नहीं है अपितु एक महान उद्देश की पूर्ति हेतु चलने वाले मिशन को यशस्वी बनाने हेतु है ।
६. एक विशेष कार्य है ज्ञानसागर महाप्रकल्प के साथ भावात्मक और क्रियात्मक रूप में जुडना । यह एक हजार ग्रंथों के निर्माण और प्रकाशन का महाप्रकल्प है जिसकी जानकारी आपको अलग से मिलेगी । यह प्रकल्प २०१९ से चल रहा है । और शीघ्र ही पूर्णता को प्राप्त होने वाला है ।

अध्ययन योजना में जुडने हेतु क्या करें

दि. १५ नवंबर २०२१ से प्रवेश प्रारंभ होगा ।
दि. ३१ दिसंबर २०२१ तक आप को प्रवेश सुनिश्चित कर लेना है ।
प्रवेश हेतु योजना की जानकारी आपको इन माध्यमों से प्राप्त होगी....

१. पुनरुत्थान विचार एवं कार्यसंदेश मासिक पत्रिका के माध्यम से ।
२. आप यदि शैक्षिक संगठन से जुड़े हैं तो उनके अधिकारियों के माध्यम से ।
३. जिन्होंने स्वतंत्र रूप से ग्रंथमाला क्रम की है उन्हें स्वतंत्र पत्र के रूप में ।
४. अध्ययन योजना में जुडे पूर्व अध्येताओं के माध्यम से ।
५. किसी न किसी कार्यकर्ता के द्वारा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में ।
६. पुनरुत्थान विद्यापीठ का समस्त शैक्षिक कार्य निःशुल्क होता है अतः अध्येताओं को शुल्क नहीं देना है । ग्रंथमाला के ग्रंथ और अन्य आवश्यक सामग्री अध्येताओं के पास होना अपेक्षित है । प्रवास खर्च अध्येताओं का रहेगा ।
७. समय-समय पर मूल्यांकन होगा । मूल्यांकन की पद्धति भी केवल लिखित ही नहीं रहेगी । मूल्यांकन परीक्षा नहीं है, उसके लिये केन्द्र पर आना ही होगा ऐसा भी नहीं है । ईस मुल्यांकन के आधार पर अध्ययन की पूर्णता का आकलन कर विद्यापीठ की ओर से 'प्राज्ञ' प्रमाणपत्र भी प्राप्त होगा ।
८. अध्ययन हेतु कई कार्यक्रम सामूहिक रहेंगे परंतु अध्यापन व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार व्यक्तिगत रहेगा ।
९. अधीति से बोध, बोध से अभ्यास आदि पदों में संक्रमण भी निश्चित समय पद, निश्चित प्रक्रिया से ही होगा ऐसा नहीं अपितु सहज पद्धति से होगा ।
१०. अध्ययन के विषय में अध्येता निश्चिंत और आश्वस्त रहें । अध्ययन कठिन, जटिलं या बोर करनेवाला कार्यक्रम नहीं है । वह आनंददायक, राष्ट्रीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण, सार्थक कार्यक्रम है । वह समय और साधना, विनय और प्रामाणिकता, निष्ठा और समर्पण की अपेक्षा करता है ।

अध्ययन योजना में जुडने हेतु संपर्क

मुनीत धीमन, विद्याक्षेत्रं, बंगलुरु के अधिष्ठाता इस अध्ययन योजना के संयोजक हैं । अध्ययन योजना की समस्त गतिविधियों की जानकारी हेतु उनका संपर्क करना है ।

मोबाइल : +९१ ९७३९० ०१५९८
अणुडाक : muneet@gmail.com

आयें, ज्ञान की सेवा और राष्ट्र को सेवा की इस यज्ञ में जुड़ें और वर्तमान समय की एक वैश्विक आवश्यकता को पूर्ति करें । इति शुभम् ।

पुनरुत्थान कार्य अने विचार संदेश

कार्तिक, शक संवत् १९४३, नवम्बर २०२१

Publish on 15th Every Month
RNI No. GUJHIN/2009/30610 GAMC-1764/2019-2021
ISSUED BY SSP VAILID UP TO 31-12-2021
PERMITTED TO POST AT AHD. PSO ON 15th EVERY MONTH

'दैशिकशास्त्र' शताब्दी वर्ष

दैशिकशास्त्र एक ऐसा ग्रंथ है जो स्वतंत्र भारत की व्यवस्थायें कैसे चलेंगी इसका सूत्रात्मक निरूपण प्रस्ततु करता है । भारतीय जीवनव्यवस्था के शाश्वत सिद्धांतों को वर्तमान युग में, जो कि ब्रिटिश व्यवस्था के कारण बहुत आहत हुई हैं, कैसे बिठाना इसका निरूपण प्रस्तुत करता है ।

यह ग्रंथ अनेक वर्षो तक अनुपलब्ध रहा । पुनरुत्थान ने इस ग्रंथ का पुनःप्रकाशन किया है ।

इसका मूल्य रु. १५०/– है ।

इस शताब्दी वर्ष में, अर्थात् ७ नवम्बर २०२१ से ६ नवम्बर २०२२ तक जिज्ञासुओं को यह रु. १२५/– में उपलब्ध होगी ।

प्राप्तिस्थान

पुनरुत्थान विद्यापीठ

वेदोऽखिलो धर्ममूलं वेदोऽखिलो सत्यमूलम् ।
वेदोऽखिलो ज्ञानमूलं नस्माद्वेदमुपास्म है ।।

समस्त वेद ज्ञान का मूल है । समस्त वेद धर्म का मूल है । समस्त वेद सत्य का मूल है इसलिये हम वेदों की उपासना करते हैं ।

जगत में ऐसा कोई विषय नहीं है जिसका मूल और संपूर्ण निरूपण वेदों में नहीं किया गया है । आज भी वेदों के अध्ययन और अनुसंधान से हम जीवन और जगत का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

भारत में ज्ञान के साथ धर्म और सत्य का अविनाभाव संबंध है । धर्म ऐसा तत्त्व है जो जीवन और जगत को धारण करता है । धारण करने का अर्थ है बनाये रखना, रक्षा करना । सत्य का अर्थ है मूल स्वरूप की रक्षा करना । यह हर प्रकार को वाणी का अधिष्ठान है । वाणी से ही हमारे संबंध बनते हैं, अभिव्यक्ति दोनों है और व्यवहार बनता है । ऐसे सत्य का मूल भी वेद ही है । ज्ञान, धर्म और सत्य का मूल होने से ही वह सनातन है और सर्वदा और सर्वथा उपास्य है ।

वेद, वेदांग, उपवेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदाध्ययन के विभिन्न आयाम हैं । सूत्र, दर्शन, स्मृति, पुराण, काव्य आदि वेदों का विस्तार है, उच्चविद्या विभूति पंडित से लेकर सामान्य कृषक, सुथार, लोहार, व्यापारी सभी के लिये यह वेदज्ञान का विस्तार है, अपनी–अपनी रुचि, सुविधा और क्षमता के अनुसार इन सभी का श्रवण, कथन, गायन, चर्चा आदि किये जाते हैं । परिणाम स्वरूप प्रत्येक भारतवासी ज्ञानसंपन्न बनकर ही अपने जीवन की रचना करता है । अर्थात् सत्य, धर्म और ज्ञान को अपने जीवन का आधार बनाना है ।

वेद की उपासना विभिन्न रूप में आज भी करने की आवश्यकता है । तभी भारत में भारतीयता की प्रतिष्ठा होगी ।

अंक प्रतिमास दिनांक १५ को प्रेषित किया जाता है । दिनांक २५ तक न मिलने पर सूचित करें । शेष बचा होने की स्थिति में नया अंक प्रेषित किया जायेगा ।

संरक्षक
डा. भानुभाई कीकाणी

प्रधान सम्पादक
इन्दुमति काटदरे (०९४२८८२६७३१)

व्यवस्थापक
विपुल रावल (९९७९०९९१४२)
व्यवस्थापकीय एवं सम्पादकीय पत्रव्यवहार विपुल रावल के नामसे करें । लिफाफे पर 'पुनरुत्थान सन्देश' अवश्य लिखें ।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	३०.०० रु.
पंचवार्षिक	१२५.०० रु.
पन्द्रह वार्षिक	३०० रु.
शुभेच्छक	१००० रु.
एक अंक	३.०० रु.

यह पत्रिका आपको उपयोगी और पठनीय लगती है तो सदस्यता शुल्क भेजने और भिजवाने की कृपा करें । शुल्क धनादेश अथवा चेक से अथवा खाते मे जमा करवा शकते है । खाता नंबर कार्यलय में से प्राप्त किजीये ।

प्रकाशक : पुनरुत्थान ट्रस्ट
चित्रकार : अजित वाघेला
मुद्रक : साधना मुद्रणालय ट्रस्ट

प्रेषक :
पुनरुत्थान ट्रस्ट
'ज्ञानम्' ९ बी, आनन्दपार्क, बलियाकाका मार्ग,
जूना ढोर बजार, कांकरिया, अहमदाबाद–३८० ०२८
दूरभाष : ०७९–२५३२२६५५
ई मेल : indumatikatdare@gmail.com
वेबसाईट : www.punarutthan.org

पुस्तप्रेष | मुद्रित सामग्री

प्रति,

Printed and Published by **INDUMATI KATDARE** on behalf of **PUNARUTTHAN TRUST** and Printed at **Sadhana Mudranalaya Trust,** 55/14 City Mill Compound, Outside Raipur Darwaja, Ahmedabad-380 022 and published from 9/B, Anand Park, Baliyakaka Marg, Old Dhor Bajar, Kankaria, Ahmedabad-380 028
Editor : **INDUMATI KATDARE**